ईश्वरप्राप्ति हेतु 'साधना' : खण्ड ४

साधनाका महत्त्व एवं प्रकार

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले तथा अन्य

सनातन संस्था

卐 **सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या** 卐

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २३, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

दिसम्बर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ९३ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ ‘सनातन संस्था’की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए ‘गुरुकृपायोग’ साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १०.१.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४९ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ–निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’के संस्थापक–सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९८

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं। ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. व्याख्या एवं अर्थ ११

२. महत्त्व १२

२ अ. अस्वस्थताका कारण आध्यात्मिक हो, तो स्वस्थ होनेके लिए साधना बढाना ही आवश्यक १२

२ आ. धर्माचरणका साधनासे योग आवश्यक १३

२ इ. जब ईश्वरसे एकरूप होनेका विचार इतना आनन्ददायी है, तो प्रत्यक्ष एकरूपतामें कितना आनन्द होगा ! १३

२ ई. साधना न करनेसे होनेवाली हानि १४

२ उ. साधनाके लाभ १५

३. साधनाके सन्दर्भमें मनुष्यजन्मका महत्त्व २२

४. साधनासम्बन्धी सैद्धान्तिक जानकारी **२४**

५. साधनाके प्रकार **५१**

६. व्यष्टि एवं समष्टि साधना **६३**

७. गुरुकृपायोगानुसार साधना **६४**

८. कलाके माध्यमसे साधना **६४**

९. आध्यात्मिक उन्नतिके चरण **६६**

१०. साधनामें आनेवाली बाधाएं **६९**

१० अ. साधनामें आनेवाली बाधाओंके प्रकार एवं उसकी तीव्रता ६९

१० आ. साधनाके चरणोंके अनुसार होनेवाली चूककी मात्रा व अहं ७०

१० इ. साधनामें आनेवाली अनिष्ट शक्तियोंकी बाधाएं ७१

११. अनुभूतियां **७४**

ग्रन्थकी विशेषता दर्शानेवाला सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग !

प्रस्तुत ग्रन्थ पटलपर (टेबलपर) रखकर हथेली ग्रन्थके मुखपृष्ठसे २ – ३ सें.मी. दूर रखें । ‘क्या हथेलीपर स्पन्दन (सूक्ष्म संवेदनाएं) अनुभव होते हैं ? ‘मनको क्या अनुभव होता है, अच्छा अथवा कष्टदायक ?’, इस ओर ध्यान दें । तदुपरान्त हथेली ग्रन्थके ऊपरसे सीधी रेखामें उठाते जाएं । ऐसा करते समय ‘ग्रन्थसे कितने ऊपर तक हथेलीमें संवेदना होती है ?’, यह भी अनुभव करें । कुछ लोग पहले प्रयासमें संवेदना नहीं अनुभव कर पाएंगे । तब यह प्रयोग पुनः करें । हथेलीमें संवेदना होना बंद हो जाए, तब यह प्रयोग रोक दें । इस प्रयोगका उत्तर पृष्ठ ‘२१’ पर दिया है ।

‘साधना’ ग्रन्थमालाकी भूमिका

प्रत्येक मनुष्य निरन्तर सुखप्राप्ति हेतु प्रयत्नरत रहता है । भौतिक वस्तुएं एवं विज्ञान के आधारपर वह सुखप्राप्तिके लिए प्रयास करता है; परन्तु उनसे प्राप्त सुख शाश्वत नहीं होता । इसका कारण यह है कि ये सब वस्तुएं ‘माया’का भाग हैं और माया ‘सान्त (स + अन्त)’ है; अर्थात मायाके प्रत्येक सुखका अन्त भी निश्चित है । शाश्वत एवं सर्वोच्च सुख को ‘आनन्द’ कहते हैं । इस संसारमें अविनाशी आनन्दका स्रोत एक ही है और वह है ‘ईश्वरीय तत्त्व’। इसलिए जैसे-जैसे हम ईश्वरीय तत्त्वसे एकरूप होनेका प्रयास करेंगे, वैसे-वैसे आनन्दकी मिठासको अनुभव कर सकेंगे । ईश्वरीय तत्त्वसे एकरूप होनेके प्रयासको ही ‘साधना’ कहते हैं ।

मनुष्यजीवनमें ८० प्रतिशत दुःखोंका कारण न्यूनाधिक मात्रामें आध्यात्मिक होता है, उदा. प्रारब्ध, अनिष्ट शक्तियोंकी बाधा, ग्रहपीडा। इन आध्यात्मिक कारणोंपर उपाय विज्ञानमें नहीं है । स्वाभाविक ही ऐसे कारणोंसे उत्पन्न दु:खोंको भी विज्ञान दूर नहीं कर सकता । दुःखके आध्यात्मिक कारणोंपर केवल साधनाके आधारपर ही विजय प्राप्त कर सकते हैं । साधनाके कारण विविध प्रकारके शारीरिक एवं मानसिक रोगोंसे मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं । पश्चिमी देशोंमें हुए शोधसे भी यह प्रमाणित हो गया है । साधनाके कारण दुःख सहनेकी शक्ति भी प्राप्त होती है । इसीके साथ साधनाद्वारा श्रद्धा, त्याग, धैर्य जैसे दैवी गुणोंका विकास भी मनुष्यमें होता है और इससे उसका जीवन आदर्श एवं परिपूर्ण बनता है । इससे ईश्वरप्राप्ति हेतु प्रयत्नरत जीवके लिए ही नहीं; अपितु प्रत्येकके लिए साधनाकी अपरिहार्यता स्पष्ट होती है ।

पूर्वजन्मकी साधना, प्रारब्ध, संस्कार, साधनामें सम्भावित बाधाएं इत्यादि पर ध्येयप्राप्तिके लिए आवश्यक अवधि निर्भर करती है । इनमेंसे किसी भी विषयकी हमें पूर्ण जानकारी नहीं रहती । इसलिए गुरुके मार्गदर्शन में अथवा शास्त्रानुसार साधना करना उचित है । शास्त्रानुसार साधना क्यों और कैसे

करें, इस सन्दर्भमें मार्गदर्शन ‘साधना’ नामक ग्रन्थमालामें किया गया है ।

साधनाके दो मुख्य अंग हैं – ‘व्यष्टि साधना’ (व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति हेतु प्रयास) एवं ‘समष्टि साधना’ (समाजकी आध्यात्मिक उन्नति हेतु प्रयास) । कलियुगमें समाजकी सात्त्विकता घट गई है, इसलिए साधना करना कठिन हो गया है । समाजकी सात्त्विकता बढनेपर ही साधना सहज कर पाना सम्भव है । इसलिए समाजको साधनाकी ओर प्रवृत्त करना भी साधनाका ही एक महत्त्वपूर्ण भाग है । व्यष्टि एवं समष्टि साधनाके विषयमें कृतिके स्तरपर मार्गदर्शन ‘साधना – भाग ३’ के अन्तर्गत ‘व्यष्टि व समष्टि साधना (प्रत्यक्ष साधना)’ ग्रन्थमें उपलब्ध है । – **संकलनकर्ता**

डॉ. जयंत आठवलेजीकी ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

‘१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें ‘प.पू.’ एवं ‘परात्पर गुरु’ की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

सनातनकी दो सद्गुरुओंके नामोंसे पहले विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका–वाचनद्वारा सप्तर्षियोंने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको ‘श्रीसत्‌शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी’ व सद्गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको ‘श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी’ सम्बोधित किया जा रहा है। ये सन्तद्वयी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थकी भूमिका

किसी वस्तुका महत्त्व विविध प्रकारसे एवं विविध पहलुओंद्वारा समझाया जाए, तो वह मनमें और अधिक गहराईतक अंकित होता है । धर्माचरणको साधनासे जोडनेकी आवश्यकता, साधनासे सप्तचक्रोंकी शुद्धि शीघ्र होना, पिछले जन्मकी साधनाके कारण वर्तमान जन्ममें साधककी वृत्ति सात्त्विक होना, अन्य लोकोंमें साधनाकी अपेक्षा पृथ्वीपर साधना करनेके लाभ, ऐसे विविध विषयबिन्दुओंद्वारा इस ग्रन्थमें साधना का महत्त्व विशद किया गया है । साधना कैसे करें, साधनामें चरण-प्रति-चरण कैसे आगे बढते जाएं, इन विषयोंके सैद्धान्तिक भागकी जानकारी अधिकांश लोगोंको रहती है, तथापि साधनाके लिए उनसे दृढतापूर्वक प्रयास होते दिखाई नहीं देते । इसलिए कि 'साधनाद्वारा निश्चितरूपसे क्या परिवर्तन होते हैं', इस विषयका विश्लेषण उन्हें कहीं भी नहीं मिलता । यही विश्लेषणात्मक भाग इस ग्रन्थमें दिया गया है । इससे साधना करना सरल होगा । साधनाके चरण, सकाम एवं निष्काम साधना, ईश्वरप्राप्तिकी यात्राके चरण, कलाके माध्यमसे साधना, साधनामें बाधाएं इत्यादि विविध विषयोंका सैद्धान्तिक विवेचन भी इस ग्रन्थमें अन्तर्भूत है ।

इस ग्रन्थमें प्रस्तुत ईश्वरीय कृपाके फलस्वरूप साधकोंको प्राप्त ज्ञान प्रगत स्तरका है । इसलिए सामान्य व्यक्तिके लिए समझना कुछ कठिन है । तथापि, वास्तवमें साधना करनेवालेमें जिज्ञासा और लगन हो, तो प्राथमिक अवस्थाके साधकको भी यह ज्ञान समझनेमें कठिनाई नहीं होगी ।

इस ग्रन्थके ज्ञानसे प्रत्येकको साधना करनेकी प्रेरणा मिले, तत्पश्चात वे साधनामें वृद्धि कर ईश्वरप्राप्ति कर सकें, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ।

- संकलनकर्ता

टिप्पणी

ग्रंथमें अनेक स्थानोंपर 'प.पू. डॉक्टरजी' यह उल्लेख ग्रंथके संकलनकर्ताओं में से 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी'के सन्दर्भमें है ।